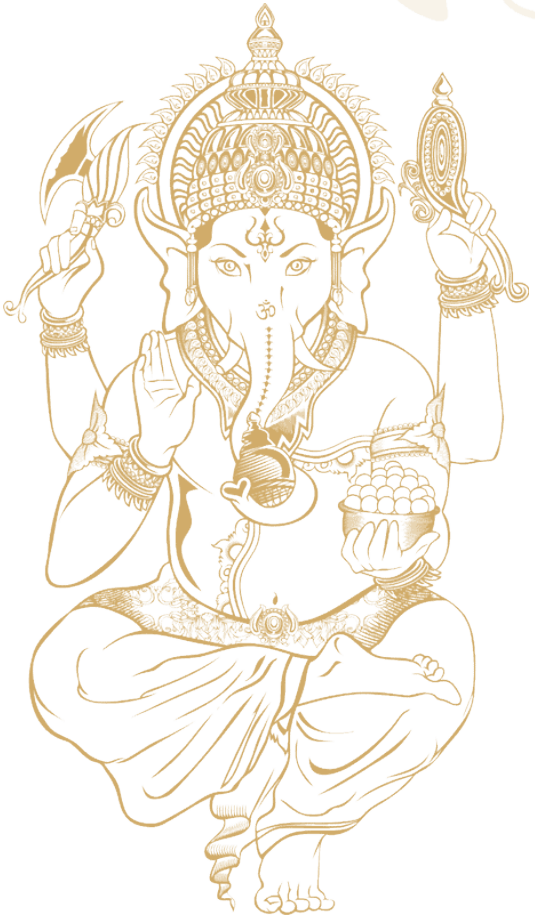

Mr.Kuldeep Kumar

18 Mar 1972

07:19 AM

Ganganagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121357201**

तिथि 18/03/1972 **समय** 07:19:00 **वार** शनिवार **स्थान** Ganganagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:28:22
अक्षांश 29:54:00 उत्तर **रेखांश** 73:56:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:27:37 घं
वेलान्तर	00:08:06 घं
सूर्योदय	06:41:00 घं
सूर्यास्त	18:44:10 घं
चैत्रादि संवत	2029
शक संवत	1894
मास	चैत्र
पक्ष	शुक्ल
तिथि	4
नक्षत्र	अश्विनी
योग	ऐन्द्र
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	अश्व
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ला-लाखन
पाया(रा.-न.)	रजत-स्वर्ण
होरा	शनि
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

केतु 1वर्ष 5मा 26दि
राहु
12/09/2016
13/09/2034

राहु	26/05/2019
गुरु	19/10/2021
शनि	25/08/2024
बुध	14/03/2027
केतु	01/04/2028
शुक्र	01/04/2031
सूर्य	24/02/2032
चन्द्र	25/08/2033
मंगल	13/09/2034

योगिनी

भ्रामरी 0वर्ष 10मा 6दि
सिद्धा
23/01/2020
23/01/2027

सिद्धा	03/06/2021
संकटा	23/12/2022
मंगला	04/03/2023
पिंगला	25/07/2023
धान्या	23/02/2024
भ्रामरी	03/12/2024
भद्रिका	23/11/2025
उल्का	23/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:31:47	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	गुरु	---	0:00			
सूर्य			04:06:08	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	मित्र राशि	1.71	ज्ञाति	पितृ	मित्र
चंद्र			10:29:56	मेष	अश्विनी	4	केतु	शनि	सम राशि	1.39	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल			00:33:46	वृष	कृतिका	2	सूर्य	राहु	सम राशि	1.22	कलत्र	भ्रातृ	विपत
बुध			21:26:49	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	नीच राशि	1.19	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			12:40:51	धनु	मूल	4	केतु	बुध	स्वराशि	0.94	भ्रातृ	धन	जन्म
शुक्र			18:43:23	मेष	भरणी	2	शुक्र	राहु	सम राशि	1.23	अमात्य	कलत्र	सम्पत
शनि			08:03:46	वृष	कृतिका	4	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि	1.15	पुत्र	आयु	विपत
राहु	व		10:16:57	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		10:16:57	कर्क	पुष्य	3	शनि	शुक्र	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

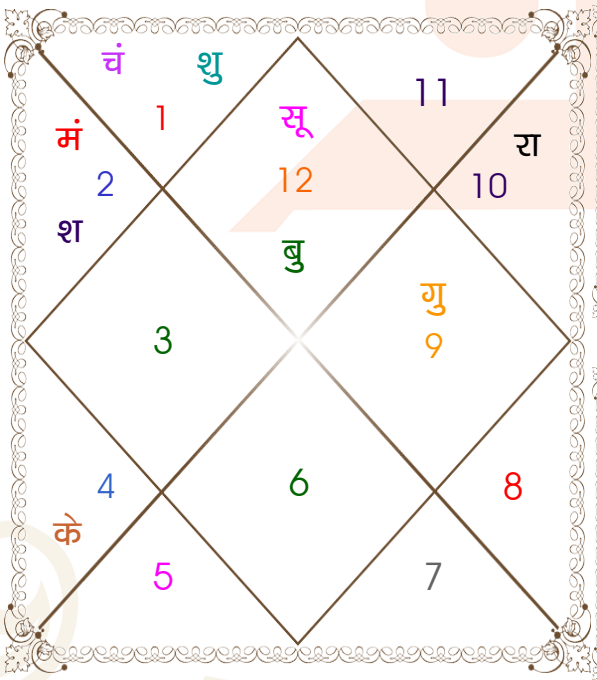

चन्द्र कुंडली

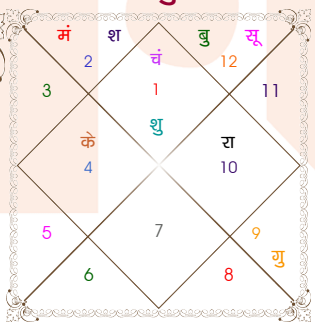

नवमांश कुंडली

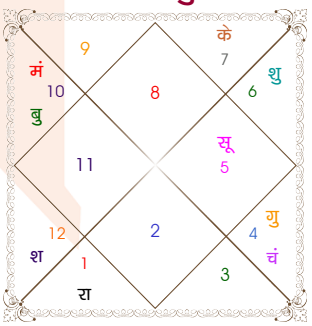

सर्वाष्टकवर्ग

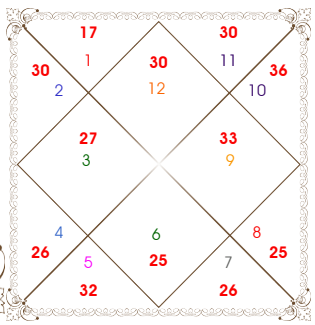

दशमांश कुंडली

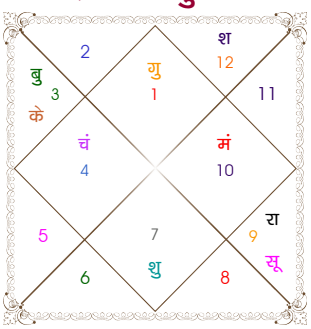

नक्षत्रफल

अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल हैं। नक्षत्रानुसार आपकी अश्व योनि, देव गण, क्षत्रिय वर्ण, आद्य नाडी तथा मृग वर्ग हैं। चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण आपका जन्म नाम का प्रथम अक्षर ल या ला होगा। यथा- लक्ष्मण

अश्विनी नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्रों के अर्न्तगत आता हैं। हालांकि चतुर्थ चरण में उत्पन्न मनुष्यों का इसका दोष अत्यन्ताल्प मात्रा होता है। फिर भी जन्म समय में इसकी शान्ति करा लेना श्रेयकर होता हैं। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28 हजार जप करवाने चाहिए तथा शान्ति के दिन जपे हुये मंत्रो के दशांश का हवन करना चाहिए इससे अशुभ फलों का नाश तथा शुभ फलो में वृद्धि होगी। यह कार्य शास्त्रोक्त विधि से किसी योग्य आचार्य के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए।

मंत्र - ऊँ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्।
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ऊँ अश्विनी कुमाराभ्याम् नमः।।

अश्विनी चतुर्थ चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति श्रृंगार प्रिय होगी तथा आभूषणों से भी आपका विशेष आकर्षण रहेगा। आपकी कार्यशैली चतुराई एवं बुद्धिमता पूर्ण होगी जिससे लोगों का ध्यान आपकी ओर आकर्षित होता रहेगा। आप देखने में अति रूपवान तथा सौभाग्यशाली होंगे।

प्रियभूषणः सुरूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च।
बृहज्जातकम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न बालक आभूषण प्रिय, रूपवान, भाग्यवान, चतुर तथा बुद्धिमान होता है।

विद्याध्ययन तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। आपके विनम्र तथा विनयशील व्यवहार के कारण सभी लोग आपसे सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। इस प्रकार दूर दूर तक आपकी कीर्ति का विस्तार होगा। आपका जीवन सुख और आनन्दपूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही धन एवं अन्य सांसारिक वस्तुओं का कभी भी अभाव नही रहेगा।

अश्विन्यामति बुद्धिवित्तविनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।
जातक परिजातः

अर्थात् अश्विनी में जन्मा जातक अति बुद्धिमान, धनवान, विनयशील, ज्ञानी, यशस्वी तथा सुखी होता है।

सत्य का पालन करने के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे। प्रारम्भ से ही सेवा का भाव आपके अर्न्तमन में विद्यमान रहेगा। सभी सांसारिक एवं भौतिक सुखों की आपको प्राप्ति होगी।

आदर्श एवं सुशील पत्नी तथा सद्गुणों से युक्त पुत्रों द्वारा आपकी कीर्ति निरन्तर बढ़ती रहेगी।

सदैवसेवाभ्युदितौ विनीतः सत्यान्वितः प्राप्तसमस्तसम्पत्।
योषा विभूषात्मजभूरितोषः स्यादश्विनी जन्मनि मानवस्य।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक सेवाभावयुक्त, विनयशील, सत्य का पालन कर्ता सर्वसम्पति को प्राप्त तथा सुशील पत्नी एवं सुपुत्रों से युक्त होता है।

आप अपने दैनिक तथा अन्य कार्यों में अत्यन्त व्यस्तता के कारण शरीर का एवं खान पान का उचित ख्याल नही रख पायेंगे फलस्वरूप शरीर में स्थूलता बढ सकती हैं। आप अपने परिश्रम द्वारा अर्जित धन एवं वैभव से ख्याति प्राप्त करेंगे तथा जनता के विभिन्न वर्गो में खूब लोकप्रिय रहेंगे।

सुरूपः सुभगोदक्षः स्थूलकायो महाधनी।
अश्विनी संभवे लोके जायते जन वल्लभः।।
जातक दीपिका

अर्थात अश्विनी में उत्पन्न मनुष्य सुन्दर, भाग्यवान, चतुर, स्थूलकाय, धनवान तथा जनता का प्यारा होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

आपकी जन्म राशि मेष हैं। अतः आप भोजन कम मात्रा में करने वाले होंगे। आप अपने माता पिता की श्रेष्ठ सन्तान होंगे तथा अन्य भाई-बहनों के होने पर आपका ही श्रेष्ठत्व बना रहेगा।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका वर्ण ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण होगा तथा आखें लाली लिए हुए गोलाकार

होंगी। सिर पर आपके चोट या घाव का निशान हो सकता हैं। निकट भविष्य में आप गंजे भी हो सकते हैं। आपके हाथ पैर कोमल कान्ति से युक्त होंगे। आप स्वभाव से ही जल से भयभीत रहेंगे। एक साहसी पुरूष होने से आप कठिन से कठिन परिस्थितियों का साहस पूर्वक मुकाबला करेंगे। समाज में आपका उचित मान सम्मान होगा। आपकी बुद्धि चंचल रहेगी। धन को आप सम्मान से अधिक महत्व प्रदान करेंगे जिससे यदा कदा समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपके बहुत से मित्र तथा सहयोगी होंगे। पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की अपेक्षा अधिक होगी स्त्री जाति से आप विजित या हारे हुये से रहेंगे लेकिन सभी लोगों से समान रूप से स्नेहपूर्वक व्यवहार करेंगे। अपनी इसी प्रवृति तथा सद्व्यवहार एवं विनयशीलता के कारण समाज से पूर्ण मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करने में सफल होंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।
कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आपको शीघ्र क्रोध आयेगा लेकिन शीघ्र ही आप प्रसन्न भी हो जाएंगे। यह आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। प्रकृति आपकी भ्रमण प्रिय होगी तथा ऐसे स्थानों पर भ्रमण करने का मन करेगा जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुचा जा सकेगा। आपकी हथेली में शौर्यसूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि भी हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अत्यधिक प्रिय तथा आदरणीय होंगे। अन्य लोगों की सेवा तथा उनके साथ सहयोग करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे स्वयं विपरीत परिस्थितियों से गुजर रहे हों।

वृतताम्रदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को आवश्यकता से अधिक प्राथमिकता देने की प्रवृति के कारण आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट हो जाएंगे जिससे वे आपसे या आप उनसे अलग हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप सारे कार्य अपनी पत्नी के कहे अनुसार ही सम्पन्न करेंगे अतः अन्य बुजुर्ग तथा संबंधी इस कारण भी आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। धनार्जन आप अपने बाहुबल तथा बुद्धि बल से स्वयं करेंगे तथा धन एवं पुत्रों से समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

सामाजिक तथा व्यापारिक संबंधों की विस्तृतता के कारण यदा कदा आप मांस,

मदिरा आदि का उपयोग भी कर सकते हैं। आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता का स्वरूप भी दिखाई देगा। इस उग्रता से आप परेशानियों में भी फसेंगे। आपकी प्रवृति में चंचलता का आधिक्य रहेगा तथा समयानुसार आप मिथ्याभाषण भी करेंगे।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

यौगिक क्रियाओं में भी आप रूचि रखेंगे अर्थात् यौगिक क्रिया करने वाले होंगे। निकट भविष्य में आप के बाल कम होंगे अर्थात् गंजापन आ सकता है। पित्तकारक या गरमी प्रदान करने वाले पदार्थों से परहेज रखें अन्यथा मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो सकता हैं।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म देवगण में हुआ हैं। अतः आपकी वाणी श्रेष्ठ मधुर तथा सत्य बोलने वाली होगी। वाणी द्वारा अन्य लोगों को आप के द्वारा कभी भी कोई कष्ट नहीं होगा सब कुछ सादगी से ग्रहण करना आपकी विशेषता होगी। अल्प भोजन करना आपको अच्छा लगेगा। गुणों के आप ज्ञाता होंगे तथा महान विद्वान लोगों द्वारा वर्णित गुणों से भी आप सुसम्पन्न होंगे। धन वैभव तथा ऐश्वर्य का अभाव आपको कभी भी नहीं लगेगा। आप अपार धन एवं सम्पति के स्वामी बनेंगे।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

देखने में आपका शरीर सुन्दर और स्वस्थ होगा। दानशीलता आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी तथा जरूरत मन्द लोग एवं संस्थाएं आपका सम्मान करेंगी। आप सरल हृदय के पुरूष होंगे तथा दिखावटीपन से हमेशा दूर रहेंगे। आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे तथा विद्वान योग्य गुणों से आप युक्त होंगे। अतः श्रेष्ठ विद्वानों की श्रेणी में आपका सम्मान किया जायेगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

अश्वयोनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्रता प्रिय व्यक्ति होंगे। प्रत्येक कार्य को आप स्वच्छन्दता पूर्वक करना चाहेंगे। बाहरी हस्तक्षेप या सलाह आपको बिलकुल पसन्द नहीं आएगी। अच्छे गुणों से आप सुशोभित रहेंगे। बल तथा साहस की आप में कोई कमी नहीं होगी जो भी कार्य करेंगे अपने साहस और बल पर आश्रित रहकर करेंगे। समाज में आपका अच्छा प्रभुत्व रहेगा। सभी लोग दिल से आपको आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। स्वर आपका थोड़ा खण्डित हो सकता है। आपके अन्दर वफादारी तथा स्वामिभक्ति के सम्पूर्ण गुण पाए जाएंगे। आप जहाँ भी कार्य करेंगे वहाँ के स्वामी के आप विशेष कृपा पात्र रहेंगे।

स्वच्छन्दः सद्गुणः शूरस्तेजस्वी घर्घरस्वरः।
स्वामिभक्तस्तुरंगस्य योनौ जातो भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात् अश्व योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, सद्गुणी, वीर प्रतापी, घर्घर स्वर वाला तथा मालिक का भक्त होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष

प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियां, मघा नक्षत्र, बवकरण, रविवार तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ रहेगा। अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य 1,6,11 शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की तिथियों में, मघा नक्षत्र, बवकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, साझेदारी लेन देन आदि किसी कार्य को सम्पन्न न करें अन्यथा अशुभ फल ही प्राप्त होंगे। इसके अतिरिक्त रविवार प्रथम पहर तथा मेष राशि के चन्द्रमा में भी शुभ कार्य करने का विचार त्याग दें। अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होंगी। इन्ही दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए।

जब समय आपके प्रतिकूल चल रहा हो अर्थात् मानसिक अशान्ति, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए। इसके साथ ही सोना, तांबा, गेहूं, गुड, लालवस्त्र आदि पदार्थो को किसी सुयोग्य पात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मन की शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव कम होकर शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7 हजार जप किसी योग्य विद्वान से कराएं एवं मंगलवार का भी उपवास रखें।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।